''लोकभाषा छत्तीसगढ़ी की 'अनुरूप' शब्द गढ़न एवं ध्वनन क्षमता''

डॉ. द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी

सहा. प्राध्या. हिन्दी

अटल बिहारी वाजपेयी शास. महा. पाण्डातराई, जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

सारांश

यद्यपि छत्तीगढ़ी तो बोली है तथापि इसकी विषेशता किसी विकसित भाषा से कम नहीं है। ये बोली समयानुरूप एवं परिस्थिति के अनुरूप अपने शब्द गढ़न एवं ध्वनन की बेजोड़ क्षमता रखती है। हर परिस्थिति में ये अपने को सहजता से मुखर करती रहती है तथा उन परिस्थितियों के अनुरूप अपने को सहजता से ढाल भी लेती है। इसकी अनुरूप शब्द गढ़न एवं ध्वनन क्षमता कई विकसित भाषाओं से भी बेजोड़ है। प्रस्तुत शोध–आलेख में लोक भाषा छत्तीगढ़ी की इन्हीं विशेषताओं पर सूक्ष्मता से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तवाना :– वैसे तो सभी भाषाओं की अपनी शब्द गढ़न एवं ध्वनन क्षमता होती है, फिर भी कई अवसरों पर ऐसा देखा गया है कि विकसित भाषाएँ भी सटीक एवं अनुरूप शब्द प्रयोग नहीं कर पाती एवं उन्हें कुछ भाव साम्य रखने वाले शब्दों से काम चलाना पड़ता है, जिससे अभिव्यक्ति में कुछ कमी की कसक रह ही जाती है। ये कमी उन्हें अखर जाती है, और उन्हें इस कमीं को पूरा करने के लिए लोकभाषाओं की शरण लेनी पड़ती है, जहाँ उसे अनुरूप शब्दों का अकूत भण्डार मिलता है, क्योंकि इसकी 'अनुरूप' शब्द गढ़न एवं ध्वनन क्षमता बेजोड़ होती है।

इस दृष्टि से अगर विचार किया जाय तो घटना, भाव, परिस्थिति, आकार, क्रिया, आदि के अनुरूप लोक भाषा छत्तीसगढ़ी तो विकसित भाषा हिंदी और अंग्रेजी से बेहतरीन ऐसे शब्द गढ़ लेती है, जिससे पाठक चमत्कृत और अवाक्–सा रह जाता है और लेखक इन्हीं शब्दों में अपनी अभिव्यक्ति की सटीकता व 'अनुरूप' भावों को वहन करने की क्षमता पाकर संतुष्ट होता है।

की–वर्ड :–बोथ, ओंग, भोङ्गू, ढकर–ढकर, चुपुर–चुपुर, कुरूम–कुरूम, चुरूम–चुरूम, गुलूम–गुलूम, गेदरा, बतिया, रूढ्ढा, सुक्सा, गुज–गुज

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य इस छत्तीसगढ़ी लोकभाषा की उन बेजोड़ 'अनुरूप' शब्द गढ़न एवं ध्वनन क्षमता से पाठक वर्ग को परिचित कराना है, जिस तरफ लगभग ध्यान नहीं दिया जाता तथा जो अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से इसे एक विकसित भाषा की श्रेणी में लाकर खड़ी कर देती है व इनके भाषा बनने के मार्ग को अवरूद्ध करने वालो के लिए एक करारा जवाब प्रस्तुत करती हुई दृष्टिगोचर होती है।

छत्तीसगढ़ी भाषा की 'अनुरूप' शब्द गढ़न एवं बेजोड़ ध्वनन क्षमता को हम विविध उद्धरणों के माध्यम से विशेष रूप से समझ सकते हैं –

1. देह में तेल लगाने (चुपड़ने) की क्रिया को मात्रानुसार हिन्दी में 'कम' या 'अधिक' शब्द से ही व्यक्त किया जाता है मगर छत्तीसगढ़ी में इसके लिए अलग–अलग शब्द व्यवहृत हुए है –

   अ. औसत या अनुपात में तेल लगाने पर छत्तीसगढ़ी में –
   'तेल चुपरे हवय' कहा जाता है।

   ब. अनुपात से ज्यादा तेल लगाने पर
   'लेत ल बोथ ले हवय' कहा जाता है

   स. अनुपात से बहुत ज्यादा तेल लगा लेने पर
   'तेल ल ओंग ले हवय' कहा जाता है।

यहाँ चुपरना, बोथना व ओंगना तेल की अलग–अलग मात्रा का द्योतक है।

2. आकार की दृष्टि से शब्द गढ़न क्षमता –

(अ). छिद्रों के अलग–अलग आकर को हिन्दी में छोटी या बड़ी छिद्र तथा अंग्रेजी में **Hole** ही कहा जाता है, लेकिन छत्तीसगढ़ी में इसे अलग–अलग तरह से शब्द दिया जाता हैं, जैसे –

1. बारीक छिद्र के लिए – टोनका/टोनकी/टोनकू कहा जाता है।
2. थोड़ी बड़ी छिद्र के लिए –'टोंडू' या 'भोंडू' शब्द प्रयुक्त होता है।
3. टोंडू से बड़ी छिद्र के लिए –'भोंड़ा' या 'भोंड़का' शब्द प्रयोग होता है।
4. बहुत बड़ा छिद्र के लिए –'भोंगरा' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(ब). छिद्रों के आकारानुसार द्रव पदार्थ (यथा–पानी) के गिरने की ध्वनि के लिए भी छत्तीसगढ़ी भाषा में सुन्दर एवं उपयुक्त शब्दों व ध्वनियों का विशेष गढ़न दृष्टव्य है –

1. छोटी सी छिद्र से पानी गिरने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए –
   'तुर तुर तुर तुरया तर तर तर तर' शब्द प्रयोग किया जाता है।
2. थोड़ी बड़ी छिद्र हो तो पानी गिरने की ध्वनि के लिए 'टुल टुल टुल टुल' शब्द का प्रयोग होता है।
3. तथा अगर छिद्र बड़ी हो तो उससे पानी के गिरने की आवाज के लिए – गल गल गल गल शब्द प्रयुक्त होता है।
4. और बहुत बड़ी छिद्र से पानी के गिरने पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि के लिए –'भल भल भल भल शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(स). अलग–अलग आकार के कंकड़/पत्थरों को पानी में फेंकने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रयुक्त शब्द इस प्रकार है–

1. छोटा सा पत्थर फेंकने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए 'दुभले' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. पूर्व से थोड़ा बड़ा पत्थर फेंकने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए 'टुभुकले' शब्द का प्रयोग किया गया है।
3. पूर्व से थोड़ा और बड़ा पत्थर फेंकने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए 'टुभरूंगले' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
4. पूर्व से और बड़ा पत्थर फेंकने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए 'टभाकले' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
5. बहुत बड़ा पत्थर फेंकने पर उत्पन्न ध्वनि के लिए 'टभरंगले' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

3. पानी पीने की क्रिया से निकली ध्वनियों के लिए छत्तीसगढ़ी में संदर्भानुसार अलग–अलग शब्द गढ़ा गया हैं, जैसे –

1. मानव एवं कुत्ते, बिल्ली के छोटे बच्चे के पानी पीनें पर निकली ध्वनि के लिए – 'चुपुल चुपुल' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. बड़े लोगो के पानी पीने के लिए – 'ढकर ढकर' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
3. शेर, सियार, भेड़िया, कुत्ते आदि के लिए पानी पीने पर निकली ध्वनि के लिए – 'चपल चपल' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
4. गाय, भैंस, घोड़े, बंदर आदि जंतुओं के पानी पीने पर निकली ध्वनि के लिए – 'सक सक या सकसकउहन' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

4. खाने या चबाने की आवाज के लिए प्रयुक्त शब्द –खाद्य पदार्थ की स्थिति एवं अवस्थानुसार छत्तीसगढ़ी में उनके खाने से उत्पन्न ध्वनि के लिए बेहतरीन 'अनुरूप' शब्द गढ़ा गया है, जिसकी ध्वनन क्षमता सचमुच बेजोड़ है –

1. मूर्रा, फूटा चना या मटर, चिप्स आदि खाने पर निःस्तृत ध्वनि के लिए 'चुरूम, चुरूम' शब्द गढ़ा गया है।
2. नासपाती, सेब, खीरा खाने पर निकली ध्वनि के लिए 'कुरूम कुरूम' या 'करम करम' शब्द गढ़ा गया है।
3. पका फल या मुलायम खाद्य पदार्थ खाने पर निकली ध्वनि के लिए 'गुलुम गुलुम' शब्द गढ़ा गया है।

4. मजबूत/कठोर दाने यथा चना, मटर आदि खाने पर निकली आवाज के लिए 'चरदम चरदम' शब्द गढ़ा गया है।
5. किसी खाद्य को अनुपात से ज्यादा या मुँह में पूरा भरकर खाने के लिए 'गबर गबर' शब्द गढ़ा गया है।

5 हँसने की क्रिया के लिए प्रयुक्त गढ़े शब्द – इसके लिए हिन्दी में हँसना, खी–खी करना, खिलखिलाना, अट्टाहस करना जैसे शब्द प्रयुक्त किये जाते है, मगर छत्तीसगढ़ी में इसकी बारीक तार्किकता देखिये–

1. थोड़ा हँसी का भाव लिए बिना ध्वनि के हँसने पर 'मुचुर मुचुर हाँसथे' कहा जाता है।
2. धीमी आवाज में धीरे धीरे हँसने पर 'खुलुल खुलुल' हाँसथे कहा जाता है।
3. निरर्थक हँसी के लिए 'गेजेर गेजेर' हांसथे' कहा जाता है।
4. मगन तथा स्वच्छंद होकर हँसने पर 'खल खल खल खल हाँसथे' कहा जाता है।

6. दौड़ने की गति के लिए 'अनुरूप' शब्द –

1. बिना आवाज के धीरे धीरे दौड़ने के लिए –'लुसुर लुसुर' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. थोड़ी आवाज के साथ तेज गति से चलेन के लिए 'लसर लसर' या 'लसरंग लसरंग' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
3. थोड़ी और जोर से पैरो की आवाज के साथ चलने पर 'धसरंग धसरंग या 'भसरंग भसरंग' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
4. पट् पट् की आवाज के साथ दौड़ने के लिए 'पटपिट पटपिट' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
5. हड़बड़ी में खूब जोर से भागने के लिए 'पटाटोर' भागना शब्द का प्रयोग किया जा रहा है।

7. मेढ़क के लिए आकार के अनुसार प्रयोग– इसके लिए हिन्दी में छोटा या बड़ा मेढ़क एवं अंग्रेजी में **Frog** शब्द का ही इस्तेमाल होता है।

1. मेचका/मेचकी – छोटे छोटे मेढकों को कहते है।
2. बेंगचा/बेंगवा या भिंदोल – पूर्ण व्यस्क या बड़े आकार के मेढक को कहते है।

8. गोबर और पानी की अलग अलग मात्रा मिलाकर लीपने की क्रिया के लिए प्रयुक्त शब्द

1. लीपना :– लीपना शब्द का प्रयोग गोबर एवं पानी को निष्चित अनुपात में मिलाकर जमीन को लीपने के अर्थ में किया जाता है, इसमें पानी की मात्रा गोबर से बहुत अधिक होती हैं।
2. गोबरउटना :– इसमें गोबर की मात्रा पानी से अधिक होती है। इस हेतु गोबर में उतना ही पानी डाला जाता हैं, जितने में गोबर का एक गाढ़ा घोल बन जाय जिसे जमीन या दीवार पर डालकर लीपा जाता है, इसे गोबर की अधिक मात्रा के कारण 'गोबरउटना' कहा जाता है।

9. खाद्य फलों की अलग अलग अवस्था के लिए छत्तीसगढ़ी में शब्द

1. कठुर्री – एकदम कच्चे फल के लिए यह शब्द प्रयोग होता है।
2. गेदरा – अधपकी अवस्था के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है।
3. पक्का –पूर्ण पके फल के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है।
4. गलगलागेह – एक दम पके फल जो गिरने या थोड़ा जोर से दबाने पर फटकर बिखर सकता है के लिए यह शब्द का प्रयोग किया जाता है।

10. अलग अलग मोटाई के डंडा (लाठी) के लिए छत्तीसगढ़ी में 'अनुकूल' शब्द इस प्रकार से गढ़े गए है –

1. सूँटी – ऊँगली की तरह पतले डंडे को कहते हैं।
2. लउठी/लउड़ी – पैर के अंगूठे जितने मोटे और लंबे डंडे को कहते हैं।
3. डंठा – लउठी से मोटा और छोटा डंडा को कहते हैं।

4. सटका – कलाई जैसी मोटाई की लंबी लाठी के लिए प्रयुक्त करते है।

11. सब्जी प्रजाति में फलों/फलियों की अलग अलग अवस्था के लिए छत्तीसगढ़ी भाशा ने कुछ इस तरह शब्द गढ़ा है –

1. बतिया/बाती – फल/फलियों की षिषु अवस्था के लिए प्रयुक्त शब्द है। जैसे – 'बाती धरे हे।'
2. केंवची/कोंवर – बतिया तथा पुश्ट फल/फली की बीच की स्थिति के लिए प्रयुक्त शब्द है। जैसे – अभी केंवची हे।
3. पोठा/पोट्ठा– फल/फलियों के पुश्ट अवस्था के लिए प्रमुख शब्द है। जैसे – चुरचुटिया पोट्ठा गे हे या पोठा गे हे
4. रूड्ढा – फल/फलियों के पुष्ट से आगे की अवस्था, जिसमें वह खाने लायक नहीं हर जाते, जिसके लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैस – तुमा हा रूड्ढा गे हे।
5. अइलाना – रूड्ढा होने के बाद सूखने के बीच की अवस्था के लिए प्रयुक्त शब्द है। जैसे –'भाँटा अइला गे हे।'
6. फोसाना – दिखने में पुष्ट फल लेकिन किसी आंतरिक बीमारी से भार में हल्का होने पर वह उपयोग योग्य नहीं रह जाता उसी के लिए प्रयुक्त शब्द है। जैसे –'कोहड़ा दीखत तो सुधर हे फेर फोसा गे हे।'
7. घोलाना – किसी फल/सब्जी आदि में सड़के के बाद कीड़े लगने पर उसमें उठने वाली दुर्गन्ध वाली स्थिति के लिए या सड़ने के बाद की अवस्था जिसमें उस फल की गरी/गुदा दुर्गंधयुक्त पानी में बदल जाता है। इसके लिए प्रयुक्त शब्द है। जैसे – रखिया हा घोला गे हे
8. सुखड़ी – किसी भी फल/फली के एकदम सूख जाने की अवस्था के लिए प्रयुक्त शब्द है।
9. खोइला/सुक्सी/सुक्सा – किसी फल/फली या भाजी आदि को काटकर धूप में पूरी तरह से सुखा कर रखने की अवस्था के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसे – सेमी खोइला, भाजी के सुक्सी, कोहड़ा खोइला, भाटा खोइला आदि।

12. आग से जलने के अलग अलग चरण (अवस्था) के लिए छत्तीगढ़ी में प्रयुक्त 'अनुरूप' शब्द ऐसे हैं –

1. झँवाना – हल्का सा आग में जलने की क्रिया के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. भँभाना –झँवाने से थोड़ा ज्यादा जलने की अवस्था के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।
3. कचालोइहा – सब्जी आदि की पूरी तरह से आग में न पकने/जलने की अवस्था के लिए प्रयुक्त शब्द है।
4. जरना – जलने की क्रिया के लिए प्रयुक्त शब्द है।
5. भूँजाना – पूरी तरह जलने की अवस्था के लिए प्रयुक्त शब्द है।
6. खपना – राख होने की अवस्था के लिए प्रयुक्त शब्द है।

13 गुजगुज – यह शब्द छत्तीसगढ़ी का बेजोड़ शब्द है, जिसे मुलायम और द्रव अवस्था के बीच की पिलपिली अवस्था के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जैसे – मुसवा गुजगुज लगीसे, साँप हा गुजगुज लगीसे।

14. छलंडना – हिन्दी में इसके लिए फिसलना शब्द का प्रयोग किया जाता है, छत्तीसगढ़ी में फिसलना के लिए 'बिछलना' शब्द है। छलंडन मतलब किसी चिकनी वस्तु का पकड़ से एकाएक निकल जाना होता है जैसे –'मछरी हांत ले छलंड दीच' या 'साबर हात ले छलंड दीच' (हाथ से तेजी से मछली का निकल जाना, हाथ से सब्बल का तेजी से फिसल जाना, आदि)

15. मुरकेटना/मुरेरना – छत्तीसगढ़ी में ऐंठने एवं टूटने की बीच की अवस्था के लिए यह शब्द प्रयुक्त होते है। जैसे –'हाँत ल मुरकेट दीच या रमकेरिया ल मुरेर के छोड़ दे हे टोरे नइहे, आदि।

निष्कर्ष :–

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि लोक भाषा छत्तीसगढ़ी अपनी शब्द गढ़न एवं अनुकूल ध्वनन क्षमता में कितना बेजोड़ और अनुकरणीय है। इस भाषा से ऐसे शब्दों को विकसित भाषाओं को ग्रहण करने की आवश्यकता है, जिससे उन भाषाओं के भाव ग्रहण शीलता में वृद्धि हो सके और वह भाषा हर परिस्थिति, घटना, भाव आदि को सटीक रूप से अभिव्यक्त कर सके।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. छत्तीसगढ़ी शब्द कोश – पालेश्वर शर्मा
2. छत्तीसगढ़ी मुहावरा कोश – चन्द्रकुमार चंद्राकर
3. छत्तीसगढ़ी शब्द कोश – चन्द्रकुमार चंद्राकर